पत्रांक .... दिनांक ....

E Content – History – B.A. Hons. IIIrd year
Paper – VI – Indian National Movement

Prof. Poonam Choudhury
Chief Coordinator History
Nalanda Open University.

Ques. – what was the Role of Moderates in the Indian National Movement. (1885 – 1905)

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उदारवादियों की भूमिका (1885 – 1905) क्या थी।

Ans. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास कांग्रेस का ही इतिहास है। कांग्रेस के नेतृत्व में ही भारत में राष्ट्रीय आंदोलन का सूत्रपात हुआ, जिसका उद्देश्य भारत को विदेशी शासन से मुक्त करना था। कांग्रेस ने 1885 ई० से 1947 ई० तक ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध लगातार आंदोलन किया और उसी के प्रयत्नों से भारत को स्वतंत्रता मिली। 1885 ई० अर्थात कांग्रेस के स्थापना – वर्ष 1947 ई० तक के भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास को अध्ययन की सुविधा के लिए तीन चरणों में बांटा जा सकता है –

1) प्रथम चरण : उदारवादी युग (1885-1905)
2) द्वितीय चरण : उग्रवादी युग (1905-19)
3) तृतीय चरण : गाँधी - युग (1919-47)

Page 2

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का प्रथम चरण : उदारवादी युग (1885-1905)

कांग्रेस के प्रारंभिक उद्देश्य - प्रारंभ में कांग्रेस का उद्देश्य भारत को अंग्रेजी शासन से मुक्त करना नहीं था। यह भारत के शिक्षित तथा अभिजात वर्ग के लोगों की एक संस्था थी। यह सही मानें में भारत की प्रतिनिधि सभा नहीं थी। इसके सदस्य नरम राष्ट्रीयता के पोषक थे और विनम्र शब्दों में सरकारी कार्यों की आलोचना कर उनमें सुधार के सुझाव देते थे। स्थापना के कई वर्ष बाद तक कांग्रेस के अधिवेशन भारत के किसी प्रमुख शहर में होते थे, जहाँ सरकारी नीति की आलोचना कर सुधार के प्रस्ताव पास होते थे। ये प्रस्ताव बड़े विनम्र शब्दों में होते थे और सरकार के प्रति किसी प्रकार के विद्रोह का भाव नहीं रखते थे। चूँकि, सरकार से कांग्रेस का कोई विरोध नहीं था, इसलिए भारतीय तथा अँग्रेज कर्मचारी भी इसके कार्यों में भाग लेते थे। लॉर्ड डफरिन तथा मद्रास के गवर्नर ने क्रमशः कांग्रेस के दूसरे और तीसरे अधिवेशन के अवसर पर भाग लेनेवाले प्रतिनिधियों को सरकारी भवन में प्रीतिभोज दिया था।

उदारवादियों का प्रभाव - प्रारंभ में कांग्रेस क्रांतिकारी संगठन नहीं था। उस समय उस की बागडोर नरम राष्ट्रवादियों के हाथ में थी। नरम राष्ट्रवादियों की अँगरेजों की न्यायप्रियता में दृढ़ आस्था थी। उनका प्रमुख ध्येय था भारतीय शासन का प्रजातंत्रीकरण तथा विधानसभाओं

Page 3

में भारतीय प्रतिनिधियों की संख्या में वृद्धि। वे ब्रिटि[illegible]
सम्राट के प्रति राजभक्ति दिखाते थे और राजनी[illegible]
तिक जागरण के लिए अपने को अंग्रेजों का
कृतज्ञ मानते थे। कांग्रेस के बारहवें अधिवेशन
में मुहम्मद रहीमतुल्ला ने कहा था, "अंग्रेज
से अधिक ईमानदार और शक्तिसंपन्न
जाति सूर्य के नीचे और कोई नहीं है। चूँकि उदारवाद
नेताओं का अंग्रेजों की न्यायप्रियता से अटूट विश्वा[illegible]
था, इसलिए वे वैधानिक आंदोलन द्वारा ही अपनी
मांगों की पूर्ति करने का प्रयास करते थे। वे प्रार्थना[illegible]
पत्रों, स्मरणपत्रों तथा प्रतिनिधिमंडलों द्वारा ब्रिटिश सरका[illegible]
से अपनी न्याय-युक्त मांगों को मानने का आग्रह
करते थे। उदारवादी युग में कांग्रेस द्वारा कई राज[illegible]
नीतिक मांगें पेश की गई थीं —

(i) धारा-सभा का विस्तार और उसके सदस्य जनता
द्वारा निर्वाचित हों।

(ii) केंद्रीय तथा प्रांतीय धारा-सभाओं में भारतीय
सदस्यों की संख्या में वृद्धि लाई जाए।

(iii) न्याय-व्यवस्था में जूरी का प्रयोग हो।

(iv) परिषद में तथा उच्च नौकरियों में भारतीयों को
स्थान मिले तथा भारतीयों को उच्च सैनिक शिक्षा
दी जाय।

(v) शस्त्र कानून में संशोधन लाया जाए।

(vi) 1905 ई० में गोपालकृष्ण गोखले ने ब्रिटिश साम्राज्य
के अन्तर्गत स्वायत्त शासन की मांग की। 1906 ई० में
इसी मांग को दादाभाई नौरोजी ने दुहराया।

कांग्रेस ने सामाजिक और आर्थिक जीवन के क्षेत्र में आव-
श्यक सुधार लाने के लिए कुछ मांगें रखी थीं —

Scanned with CamScanner

Page 4

(i) भूमि कर में कमी की जाए।
(ii) सिंचाई की उचित व्यवस्था हो
(iii) भारतीय उद्योग-धंधों को प्रोत्साहित किया जाए एवं उसका आधुनिकीकरण किया जाय।
(iv) भारत से बाहर भेजे जाने वाले अनाज के निर्यात पर प्रतिबंध लगाया जाए।
(v) शासन के व्यय में कमी की जाए
(vi) नमक-कर को समाप्त किया जाए

सरकार की नीति में परिवर्तन और उसके परिणाम

आरंभ में ~~कांग्रेस~~ काँग्रेस की स्थापना को ब्रिटिश कूटनीति की महान विजय समझा जाता था। परंतु, सरकार और काँग्रेस के बीच यह मधुर संबंध अधिक समय तक कायम नहीं रह सका। ह्यूम के उद्देश्य सच्चे और प्रशंसनीय थे। ह्यूम कांग्रेस द्वारा भारतीयों की सेवा करना चाहता था। परंतु, शीघ्र ही सरकार इस संगठन से भयभीत हो गई और उसे इसमें खतरा दिखाई देने लगा। सरकार ने काँग्रेस को प्रोत्साहन देना छोड़ दिया। 1888ई० में सरकार की कांग्रेस-संबंधी नीति में परिवर्तन हुआ। लॉर्ड डफरिन ने एक भोज के अवसर पर कहा, "अब कांग्रेस का झुकाव राजद्रोह की ओर हो गया है और यह संस्था शिक्षित भारतीयों के नाममात्र का प्रतिनिधित्व करती है।" 1990 ई० में सरकार ने एक विज्ञप्ति निकाली जिसके अनुसार सरकारी अधिकारियों को काँग्रेस के अधिवेशन में शामिल होने की मनाही की गई। मुसलमानों को भी कांग्रेस के कार्यों से अलग रखने की चेष्टा होने लगी। इस प्रकार, सरकार एवं कांग्रेस के आपसी संबंधों में कटुता बढ़ने लगी।

सरकार के इस बदलते हुए रुख के बावजूद कांग्रेस अपने रास्ते पर चलती रही। निःसंदेह काँग्रेस की

Page - 5

कार्य नीति में कुछ परिवर्तन आया। कांग्रेस के नेताओं ने पूर्ण स्वराज के विचारों का संवर्धन करना शुरू किया। धीरे-धीरे कांग्रेस की ओर से देश के विभिन्न मांगों में सुधार की जाने लगी और राष्ट्रीय मांगों की पूर्ति के लिए प्रस्ताव होने लगे। किंतु, अब भी कांग्रेसी नेताओं का अंग्रेजों में विश्वास था। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने पूना कांग्रेस में भाषण देते हुए भारतवासियों को ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादार बताया। इंगलैंड में भी कांग्रेस के कार्यों का प्रचार तेजी से होने लगा, जिसमें कुछ अंग्रेजों ने भी दिलचस्पी दिखाई। ब्रिटिश पार्लियामेंट के सदस्य चार्ल्स ब्रेडला और सर विलियम वेडबर्न के नाम इस संदर्भ में विशेष उल्लेखनीय हैं, जिनके प्रयत्नों के फलस्वरूप 1890 ई में इंडियन पार्लियामेंटरी कमिटी की स्थापना हुई। इस कमिटी ने 1890 ई० में 'इंडिया' नामक एक पत्रिका भी प्रकाशित की, जो 1892 ई० में मासिक और 1896 में साप्ताहिक रूप में ~~प्रकाशि~~ प्रकाशित होने लगी। इन प्रयत्नों के परिणामस्वरूप 1892 ई० में इंडियन कौंसिल ऐक्ट (Indian Councils Act, 1892) पास हुआ, जिससे भारतीय विधानमंडल के कुछ सुधार हुए, यह सुधार - अधिनियम कांग्रेस के प्रयत्नों का ही प्रतिफल था। परन्तु, कांग्रेस इससे संतुष्ट नहीं हुई। यही नहीं, भारतीयों को जो थोड़े-बहुत राजनैतिक अधिकार प्राप्त हुए थे, उनपर भी कुठाराघात करना अपराध माना गया। 1899 ई० में कलकत्ता कारपरेशन के भारतीय सदस्यों की संख्या को घटा दिया गया। 1905 ई

में प्रेस की स्वतंत्रता सीमित कर दी गई। बाल गंगाधर तिलक को तथा अनेक समाचारपत्रों के सम्पादकों को कैद कर लिया गया। इससे उदारवादियों में अत्यधिक असंतोष हुआ। सरकार भी कांग्रेस के प्रस्तावों को ठुकराती रही, अतः कांग्रेस के कुछ सदस्यों को विश्वास हो गया कि केवल प्रस्ताव पारित करने से उद्देश्य की सिद्धि नहीं होगी, इसके लिए कुछ अधिक ठोस कदम उठाने होंगे।

तिलक का पदार्पण — उदारवादियों के समय ही भारतीय राजनीतिक रंगमंच पर बालगंगाधर तिलक का पदार्पण हुआ। उनका कहना था कि कांग्रेस की नरमी और राजभक्ति स्वतंत्रता प्राप्त करने में बाधक है। केवल प्रस्ताव पास करने तथा अंग्रेजों के सामने हाथ पसारने से राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं होंगे, बल्कि उसके लिए आन्दोलन करना होगा। बालगंगाधर तिलक का जन्म हुआ था। तिलक बहुत बड़े विद्वान और सफल पत्रकार थे। संस्कृत, मराठी और अंगरेजी भाषा में वे पारंगत थे। उनका विश्वास था कि जो अपने पैरों पर नहीं खड़ा होता उसकी सहायता ईश्वर भी नहीं करते। वे महान देशभक्त थे और उनका दृढ़ विश्वास था कि ब्रिटिश शासन के अंत के बिना देश का कल्याण संभव नहीं है। उन्होंने गणपति समारोह और शिवाजी समारोह का आयोजन कर लोगों की धार्मिक भावना को जगाया तथा उनमें राष्ट्र के प्रति भक्ति पैदा की। उन्होंने विद्यार्थियों के लिए अनुशासन तथा शारीरिक स्वास्थ्य पर अधिक जोर दिया, ताकि युवकों में साहस का विकास हो और वे निर्भीक होकर राष्ट्रीय आंदोलन में भाग ले सकें। महाराष्ट्र के युवकों में जोश तथा स्वदेश-प्रेम उत्पन्न करने में तिलक बहुत कुछ सफल हुए इसमें उन्हें महाराष्ट्र के आर्थिक संकट से भी सहायता मिली। उस समय महाराष्ट्र अकाल और प्लेग का शिकार था। इससे ब्रिटिश शासन

के विरुद्ध लोगों में घोर असंतोष फैल रहा था। तिलक - जिन्हें अंग्रेज 'भारतीय अशांति का जनक' कहकर पुकारते थे - राजद्रोह में गिरफ्तार कर लिए गए और उन्हें अठारह माह के कारावास की सजा दी गई। किंतु, कुछ कारणों से सजा छह महीनों की कर दी गई। सरकार की इस दमनकारी नीति का विपरीत फल हुआ। तिलक की गिरफ्तारी से भारतवासी क्षुब्ध हो उठे और देश में घोर असंतोष फैल गया। निःसंदेह, कुछ समय के लिए राष्ट्रीय प्रगति रुक गई थी और भारत के राजनैतिक गगन में शांति कायम हो गई थी, किंतु यह शांति आने वाले झंझावात का द्योतक थी, जो 1905 ई० में फूट पड़ी।

1905 ई० तक कांग्रेस पूर्णतः उदारवादियों तथा नरमदलीय नेताओं के प्रभाव में थी, जो अंग्रेजों की न्यायशीलता तथा सच्चाई में विश्वास करते थे। वे प्रार्थनापत्रों तथा प्रतिनिधि-मंडलों के माध्यम से सरकार से अपनी मांगों को मानने का अनुरोध करते थे। शासन में किसी महत्वपूर्ण या मूलभूत परिवर्तन के समर्थक नहीं थे, अपितु परिषदों, सरकारी सेवाओं, स्थानीय संस्थाओं और रक्षा सेनाओं के क्रमिक सुधार की मांग करते रहे। दादाभाई नौरोजी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, ए. ओ. ह्यूम, गोपाल-कृष्ण गोखले, सर फिरोजशाह मेहता और महादेव गोविंद रानाडे प्रमुख उदारवादी नेता थे। गुरुमुख निहाल सिंह के शब्दों में, "आरंभ में कांग्रेस द्वारा राजभक्ति की प्रतिज्ञा, नरम नीति, आवेदन की नहीं वरन भिक्षावृत्ति की नीति अपनाने पर भी, उसने यह समय राष्ट्रीय जागरण, राजनीतिक शिक्षा तथा भारतीयों को एक सूत्र में बाँधने और उनमें सामान्य भारतीय राष्ट्रीयता की भावना के निर्माण में बहुत अधिक सहयोग दिया।

उदार राष्ट्रीयता का मूल्यांकन — 1885 ई० से 1905 ई० तक कांग्रेस उदारवादियों का गढ़ बनी रही। शुरू में उदार राष्ट्रवादियों ने तो कार्य किए उनमें कई त्रुटियाँ थीं —

क) ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति मिथ्या धारणा — उदारवादी नेता यह समझ नहीं सके कि भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का वास्तविक आधार क्या है अथवा उसकी क्या प्रकृति है। शासन और शासित के स्वार्थ परस्पर - विरोधी होते हैं। उदारवादी नेताओं का यह अनुमान गलत था कि अंगरेजों और भारतीयों के हित परस्पर-विरोधी न होकर एक-दूसरे के साथ जुड़े हैं। उदारवादी अंगरेजों की न्यायप्रियता के प्रति आवश्यकता से अधिक आशान्वित थे। एक आधुनिक लेखक का यह कहना है कि उदारवादियों की असफलता का यह कारण था कि उन्हें अंगरेजों की अपराजेयता पर विश्वास था और वे समझते थे कि पूंजीपतियों के उत्पादन की प्रक्रिया ही सबसे अच्छी है। वे भूल गए कि ब्रिटिश सरकार का मूल उद्देश्य भारत का आर्थिक शोषण और राजनीतिक पराधीनता है। जब उनकी छोटी मांगें भी अस्वीकार कर दी गई तो उनका मोह-भंग हुआ।

(ख) राष्ट्रीय तत्वों का अभाव - कांग्रेस की स्थापना का आधार शिक्षित भारतीयों का सहयोग था। जनसाधारण के बीच उनकी पैठ नहीं थी। लाला लाजपत राय ने लिखा है, "प्रारंभ से कांग्रेस आंदोलन में राष्ट्रीय आंदोलन के तत्वों की कमी थी। यह आंदोलन न तो जनता द्वारा संयोजित था और न उसके द्वारा अनुप्राणित ही।"

उदारवादियों की सफलताएं — उदारवादियों के कार्यक्रम में त्रुटियाँ थीं और उन्हें अपने उद्देश्य में विशेष सफलता नहीं मिली। इस कारण लोगों

Scanned with CamScanner

उनके महत्व को नजर अंदाज कर देते थे। उन्होंने खुलकर ब्रिटिश सरकार का सामना नहीं किया, क्योंकि वे तत्कालीन परिस्थिति से विवश थे। यदि वे उग्र नीति अपनाते तो आरंभ में ही सरकार कठोरता से उन्हें दबा देती। ऐसी परिस्थिति में उन्होंने जो सेवा भारत के लिए की वह भी न कर पाते। वे भारतीय राष्ट्रीयता के अग्रदूत थे, इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। वस्तुतः, कांग्रेस के उदारवादी नेताओं के अग्रदूत थे, इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। वस्तुतः, कांग्रेस के उदारवादी नेताओं के प्रयास से ही भारत में राष्ट्रीयता की लहर दौड़ी थी। उन्हीं के प्रयास से औपनिवेशिक स्वशासन तथा प्रशासनिक सुधार की मांगें की जाने लगी थीं। भारतीयों को राजनीतिक प्रशिक्षण दिलाने की दिशा में उनका योगदान प्रशंसनीय था।

उदारवादियों के प्रयास से ही 1892 ई० का 'भारतीय परिषद अधिनियम' पारित हो सका था। भारत में प्रतिनिधिमूलक संस्थाओं के विकास में यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम था।

उदारवादियों के राजनीति पर प्रभाव से एक लाभ अवश्य हुआ। राष्ट्रवादियों के हृदय में आत्मविश्वास तथा आत्मसम्मान की भावना जाग्रत हुई। वे धीरे-धीरे समझने लगे कि ब्रिटिश शासन उनका कल्याण करना नहीं चाहती है।

भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम की नींव इन्हीं बीस वर्षों में उदारवादियों के प्रयास से डाली गई। उदारवादी नेताओं ने ही हमें इस योग्य बनाया कि हम स्वतंत्रता की मांग सरकार के समक्ष रख सकें। डॉ० पट्टाभि सीतारमैया ने उदारवादियों के कार्यों की प्रशंसा में यह विचार व्यक्त किया है, "प्रारंभिक राष्ट्रवादियों ने ही आधुनिक स्वतंत्रता की इमारत

Scanned with CamScanner

की नींव डाली। उनके प्रयत्नों से ही इस नींव पर एक-एक मंजिल करके इमारत बनती चली गई। पहले उपनिवेशों के ढंग का स्व-शासन, फिर साम्राज्य के अंतर्गत होम रूल, इसके ऊपर स्वराज्य और सबसे ऊपर पूर्ण स्वाधीनता की मंजिलें बन सकी हैं।"

Scanned with CamScanner